Que - 2. → द्वितीय अफीम युद्ध के कारणों पर प्रकाश डालें?
अथवा What were the causes of the IInd Opium War? Describe it.

Ans. → द्वितीय अफीम युद्ध ~~का~~ चीन के इतिहास ~~है~~ की एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण घटना है। द्वितीय अफीम युद्ध का चीन में वही स्थान प्राप्त है, जो भारतीय इतिहास में बक्सर के युद्ध का। अर्थात द्वितीय अफीम युद्ध की तुलना भारत ~~देश~~ में बक्सर के युद्ध से की जा सकती है। ~~जैसे जिस तरह सिराजुद्दौला~~ को जिस तरह प्लासी के विजय से अंग्रेजों को केवल बंगाल की दिवानी प्राप्त हुई थी लेकिन बक्सर के विजय ने उसे अवध तक पहुंचा दिया और बिहार, बंगाल, तथा उड़ीसा पर उनका प्रभुत्व स्थापित करा दिया। ठीक इसी प्रकार प्रथम अफीम युद्ध ने केवल ~~विदे~~ विदेशियों के लिए पांच बन्दरगाह खोले थे लेकिन ~~स~~ उनको पूर्ण स्वतंत्रता नहीं मिली लेकिन द्वितीय अफीम ~~यु~~ युद्ध ने उन्हें ~~[illegible]~~ पर अधिकार दिला दिया और अंग्रेज चीन के अब भाग्यविधाता बन गये।

अतः द्वितीय अफीम युद्ध के निम्न लिखित कारण थे :-

(1) विदेशियों का असंतोष :→ प्रथम

अफीम युद्ध केवल एक शुरुआत थी ग्रेट-ब्रिटेन ने पहली लड़ाई जीत ली थी लेकिन शांति संधि किसी पक्ष में थी, यह एक ~~क~~ संदिग्ध प्रश्न था। 1850 ई० तक ~~विदेशी यह समझने लगे थे कि~~ तक पाँच बन्दरगाहों में विदेशी यह समझने लगे थे कि पहली संधि में हुई व्यवस्था यदि पूर्णतः विफल नहीं हुई है तो अपर्याप्त अवश्य है। ~~यद~~ यद्यपि यूरोप चीन में प्रवेश कर चुका था लेकिन ~~प्रवेश~~ प्रवेश मात्र ही पर्याप्त नहीं था हकीकत तो यह है कि अभी भी पश्चिमी व्यापारियों की स्थिति सुदृढ़ नहीं थी उनके पैर अच्छी तरह नहीं जम पाये थे। यद्यपि 1842 ई की संधि में यह मान लिया गया था कि चीनी राजदरबार में ब्रिटिश अधिकारियों को बातचीत करने में समान का दर्जा दिया जायेगा किन्तु इसका यह अर्थ नहीं था कि बन्दरगाहों पर भी सभी यूरोपीयों के साथ समानता का ही बर्ताव किया जाए। अभी भी चीन में ऐसा कोई माध्यम नहीं था, कि जिससे विदेशी शक्तियाँ चीन में कूटनीतिक वार्तालाप कर सके। न तो वहाँ विदेश मंत्रालय था और न चीन दूसरे देशों में अपना दूतावास ही खोल रखा था। चीन के लोग अपने आप को विदेशियों से श्रेष्ठ मानते थे और उनके साथ आदर्श बर्ताव नहीं करते थे। अतः 1842 ई० की संधि से कैन्टन में निवास करने वाली चीनी विदेशियों से बड़े क्षुब्ध थे और वे नहीं चाहते थे कि उनका बन्दरगाह विदेशियों के लिए पूरी तरह खोल दिया जाए। अपना विरोध प्रगट करते हुए पर्चे बाटे ~~[illegible]~~ उनपर लिखा था कि [illegible] विदे[illegible] ~~[illegible]~~ उखाड़ फेंको

तो उनको मार दिया जाएगा और सारे नगर का पेड़ पौधों की पत्तियाँ तक छील दिया जाएगा, कि जिससे चिड़ि भी भूखों मर जाये।

② ताइपिंग विद्रोह:→ प्रथम अफीम युद्ध में चीन की पराजय से मंचु साम्राज्य का पोल खुल गया था। शासकों की अयोग्यता ने केन्द्रीय सरकार ~~के~~ खोखलापन का पर्दाफाश कर दिया। भ्रष्टाचार, शोषण और षड्यंत्र ने लोगों का जीवन दूभर बना दिया। फलस्वरूप देश में बेरोजगारी, तथा भूखमरी और बढ़ गयी। दक्षिण चीन में एक भयंकर अकाल पड़ा। इससे चीन में विद्रोह की आशंका उत्प हो गयी। प्रथम अफीम युद्ध के बाद से चीन में छोटे-बड़े सौ विद्रोह हुए थे। इनमें सबसे भयंकर विद्रोह ताइपिंग विद्रोह था जो सि ग्यारह प्रान्तों में फैल गया। यह चीन में वि के बढ़ते हुए प्रभाव के विरुद्ध हुआ था। 1853 से 1864 ई० तक नानकिंग पर ताइपिंग विद्रोहि का आतंक रहा। इसको दबाने के लिए सरकार ने कोई कसर न छोड़ी। आखिर में वि के सहयोग से चीनी सरकार ने इसे शान्त किया जो कि IInd opium war का एक महत्वपूर्ण कारण था।

③ विदेशियों की शरारत में वृद्धि:→ वस्तु ताइपिंग विद्रोह को दबाना चीन के लिए बिल्कुल आसा सिद्ध नहीं हो सका। चीन जब भयंकर कुचक्र में फंस चुका था। ~~मंचु~~ ताइपिंग विद्रोह और आन्त खलबली से ~~और~~ मंचु-शासन को जो धक्का लगा, उसे देखकर यूरोप के लोगों के मुँह में पानी भर आया और उन्हें लगा कि मन चाही सहूलियत लेने का एक सुनहरा अवसर है।

नहीं मिल सकता है। एक तो चीनी सरकार आन्तरिक खलबलियों से परेशान थी और दूसरी ओर अफीम का गैर व्यापार विदेशियों द्वारा बढ़ता गया। हालांकि है कि प्रथम आंग्ल-चीन युद्ध के जड़ में अफीम ही थी उसी समय इसकी व्यापार पर प्रतिबन्ध लग गया था लेकिन इसका चोरी छुपे व्यापार चलता ही रहा।

ताईपिंग विद्रोह के कारण अब मंचू सरकार की कमजोरिया ~~प्रकट होने लगी~~ पूर्णतः प्रगट हो गयी। फलस्वरूप विदेशियों ने कई तरह की शरारते शुरू कर दी। अब वे गरीब चीनियों को बहका-फुसलाकर काफी संख्या में क्यूबा, पश्चिमी अमेरिका, पेरू, आदि जगहों में ले जाने लगे। 1851 ई० के अन्त में केवल कैलिफोर्निया में पच्चीस हजार चीनी मजदूर काम करते थे। अब स्वेच्छा से चीनी मजदूर नहीं मिलते थे तो विदेशियों ने धमकी का भी सहारा लेना शुरू कर दिया और जबर्दस्ती जहाजों पर लाकर विदेश ले जाना शुरू कर दिया। मंचू सरकार ने इसे रोकने के लिए कई आदेश जारी किये लेकिन विदेशियों की शरारत नहीं रुकी।

(4) नयी संधि की माँग :→ यद्यपि 1842 ई० की संधि से ब्रिटिश व्यापारी निश्चित ही लाभ की स्थिति में थे फिर भी वे असंतोष व्यक्त करते रहे और वे इस बात पर जोर देते रहे कि उनके अधिकार बढ़ाए जायें तथा उक्त संधि पर पुनः विचार किया जाय। ताईपिंग विद्रोह से मंचू सरकार की दुर्बलता प्रगट हो जाने से अब अंग्रेज अधिक सुविधाओं की मांग करने लगे उनमें ~~स्वार्थ~~ अब अन्य अधिकाधिक यूरोपीय

चीन पहुँचने लगे थे।

नानकिंग की संधि में ब्रिटेन संशोधन करने ~~के~~ लिए कई तरह के बहाने बना रहा था। उसका कहना था कि फ्रांस और अमेरिका के साथ चीन ने जो संधि किया है उसमें ब्रिटेन ~~के~~ कई विशेष सुविधाएँ उन्हें ~~को~~ प्राप्त है। और 12 वर्षों के बाद उसपर फिर से विचार करने को कहा गया है। लेकिन ब्रिटेन के साथ ऐसा कोई बात नहीं है। इसलिए ब्रिटेन स्पष्ट कह दिया कि 1854 ई० तक नानकिंग संधि पर पुनः विचार होना ~~चाहि~~ चाहिए।

(5) लार्ड बौरिंग के प्रस्ताव :→ अंग्रेज चीन की अन्दरूनी परेशानी से फायदा उठाने को तुले हुए थी। अतः फरवरी 1854 ई० में ब्रिटिश उच्चायुक्त लार्ड बौरिंग ने कैन्टन के चीनी अधिकारियों के समक्ष एक नये ~~के~~ प्रस्ताव की सूची पेश की। इसमें माँग की गयी थी कि चीनी साम्राज्य के समस्त आन्तरिक प्रदेश तथा तटवर्ती नगरों में विदेशियों को प्रवेश की अनुमति मिले। यांगत्सी में उन्मुक्त जहाजरानी तथा उसके तटवर्ती नगरों में एवं नानकिंग में घुसने की अनुमति माँगी गयी थी। अफिम व्यापार को वैध करने की भी माँग की गयी थी। साथ ही निर्यात के लिए खरीदे जानेवाले अथवा आयातित माल पर आन्तरिक प्रवेश चुंगी खत्म करवाने, समुद्री लूटमार को खत्म करवाने, एवं कुली व्यापार को नियमन की बातें भी इसमें सम्मिलित थी। इसके अतिरिक्त ब्रिटिश सरकार की इच्छा थी कि पिकिंग में उसको राजदूत रखने की इजाजत मिले ताकि मंचू शासन के साथ उसका सम्पर्क कायम हो सके। ब्रिटेन ~~के~~ ने इस माँग की

फ्रांस और अमेरिका का पूर्ण समर्थन प्राप्त था।
लॉर्ड बॉरिंग ने जब ये सारे प्रस्ताव कैन्टन के वायसराय के समक्ष पेश किये तो ~~उसने~~ उसने उसका कोई जवाब नहीं दिया। उसने इस सिलसिले में पिकिंग से बात करने की कोशिश की। लेकिन उसे आदेश मिला की उसे कैन्टन की अधिकारियों से ही बात करनी ~~न~~ चाहिए। इन दिनों क्रीमिया युद्ध के कारण ब्रिटेन चुप हो गया ~~क~~ जैसे ही 1856 में क्रीमिया का युद्ध ~~समाप्त~~ शान्त हुआ। उसने चीन पर चढ़ाई करने की कोशिश की। इसका समर्थन, फ्रांस तथा अमेरिका ने भी किया।

(6) आगस्टे चैपडीलेन की हत्या :→ फरवरी 1856 ई० में फ्रांस के एक कैथोलिक पादरी आगस्टे ~~चैपलिन~~ चैपडीलेन को क्वांग्सी के स्थानीय अधिकारियों ने फांसी दे दी ~~थ~~ थी। क्योंकि वह संधि के बन्दरगाह से चला गया था। उसपर इल्जाम था कि वह चीन में विद्रोह कराना चाहता है। विद्रोह का अन्जाम लोगा बड़ा ही खराब था। क्योंकि क्वांग्सी से ही ताइपिंग विद्रोह शुरु हुआ था इसी प्रकार सभी ~~कैथ~~ फ्रांस के कैथोलिक पादरी चीन के लोगों को यह शिक्षा देते थे कि वह फ्रांस को अपना मित्र तथा मुक्तिदाता समझे।

जब फ्रांसीसी पादरी की हत्या का समाचार जुलाई 1856 ई० में कैन्टन पहुंचा। तो फ्रांस के राजदूत ने तुरन्त विरोध ~~पत्र~~ जारी किया और उसने कहा कि फ्रांस के नागरिकों को चीनी न्यायालयों द्वारा दण्डित करना उनके अधिकारों का अतिक्रमण है ~~२०~~ और चीन को सबक देने के लिए फ्रांस अब ब्रिटेन से सहयोग करेगा।

(7) ऐरो जहाज की घटना :→ ऐरो जहाज की घटना द्वितीय अफीम युद्ध के तात्कालिक घटना सिद्ध

ii) इसी समय ऐरो नामक जहाज की घटना घट गयी। जिससे अंग्रेजों को युद्ध छेड़ने का एक बहाना मिल गया। यह जहाज हांगकांग में दस वर्ष से रहने वाले एक चीनी का था, जिसका कप्तान एक ब्रिटिश नागरिक था। इस जहाज पर एक कुख्यात डाकू था जो वर्षों से फरार था और चीनी सरकार उसको पकड़ने की कोशिश कर रहे थे। जब यह पता चला कि उक्त डाकू उस जहाज पर है तो चीनी अधिकारियों ने उसे पकड़ने का आदेश दिया। फलस्वरूप चीनी पुलिस जहाज में घुस गये और 14 चालक दल के सदस्यों में से 12 को समुद्री लूट के अभियोग में गिरफ्तार कर लिया। इसपर कैन्टन स्थित वाणिज्यदूत ~~के~~ हैरी पार्क्स ने तुरन्त इसका विरोध किया और इस आधार पर बन्दियों की तत्काल रिहाई की मांग की। इसपर चीनीर और कहा कि चीनी सरकार ब्रिटेन से माफी मांगे। ऐसा नहीं करने पर अंग्रेजी नौसेना ने चीनी युद्ध पोत पर हमला बोल दिया। जो द्वितीय अफीम युद्ध की शुरुआत मानी जाती है।